United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

भारतीय संस्कृति में ज्ञान परंपरा

डॉ .बलगा सुभा
एम.ए,एम. फिल,पी. हेच. डी (Gold medal)
सरकारी महाविद्यालय विजयनगरम टाऊन
विजय नगरम, आन्ध्र प्रदेश।

प्रास्तावना :

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह संस्कृति ज्ञान, धर्म, धर्मराज्य, लोक परंपरा, तत्त्व, जीवन दृष्टि, शिक्षा, कला, दर्शन आदि अनेक तत्वों का समन्वय है। विशेषतः ज्ञान की परंपरा ने भारतीय समाज को मूल रूप से आकार दिया है। ज्ञान परंपरा केवल सूचना या शैक्षणिक शिक्षा नहीं थी, बल्कि जीवन की गहन समझ, आध्यात्मिक अनुभूतियों, सामाजिक विवेक, व्यवहारिक जीवन कौशल तथा चरित्र निर्माण की प्रक्रिया भी थी।

भारत में ज्ञान का केंद्र कभी सीमित नहीं रहा- न तो केवल विद्यालय और न तो केवल गुरुकुल। यह ज्ञान घर-परिवार, आश्रम, मन्दिर, बाजार, सभा, यात्राओं, युद्धक्षेत्रों और स्वाध्याय से भी मिलता था। ज्ञान केवल बुद्धि प्राप्ति नहीं थी; वह जीवन को सजग, संवेदनशील, संतुलित और सशक्त बनाना है।

भारतीय संस्कृति में ज्ञान की परिभाषा एवं स्वरूप:

भारतीय दृष्टि में 'ज्ञान' केवल पुस्तकबद्ध जानकारी नहीं है; वह अनुभव, अनुभूति, विवेक, विश्लेषण, आत्मचिंतन तथा अन्वेषण का समन्वय है। आत्मज्ञान के साथ ही सामाजिक, अध्यात्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और शारीरिक ज्ञान इस परंपरा के अंग रहे हैं।

भारतीय परम्परा में ज्ञान का स्वरूप:

श्रुति और स्मृति - वेदों और उपनिषदों की परंपरा
दर्शन - न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, संदर्भ, बौद्ध, जैन आदि
गीता का जीवन दर्शन - धर्म, कर्म, भक्ति और योग
व्यावहारिक ज्ञान - आर्यभट्ट, चरक, सुश्रुत, कालिदास, कालीदास
नाट्यशास्त्र, संगीत, वास्तुशास्त्र - कला एवं सौंदर्य दर्शन
भाषा, साहित्य, अर्थशास्त्र - भाषा विज्ञान से राजनीति तक

भारतीय ज्ञान परंपरा अनुभव और तर्क पर आधारित थी; केवल पाखंड, पूजा-अर्चना या रितुओं तक सिमटी नहीं थी। यही कारण है कि इसकी गूँज आज भी विश्वभर में विद्वानों को आकर्षित करती है।

प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा:

भारतीय संस्कृति में ज्ञान का मुख्य आधार रहा है गुरु-शिष्य परंपरा। प्राचीन काल में शिक्षा का केंद्र गुरुकुल और आश्रम थे। विद्यार्थी घर से गुरु के पास आते और वर्षों तक ज्ञान, चरित्र, आत्म-नियंत्रण और जीवन कौशल सीखते थे।

गुरु-शिष्य परंपरा के मुख्य गुण:

गुरु को आध्यात्मिक एवं नैतिक मार्गदर्शक माना जाता था
शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तक नहीं, चरित्र निर्माण, आत्मअन्वेषण, मनन और व्यवहार थी
विद्यार्थी को आत्मनिष्ठ, धैर्यशील, संयमी बनाया जाता था
शिक्षा का लक्ष्य था आत्मसाक्षात्कार एवं समाज सेवा

आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, पतंजलि, भगवान बुद्ध आदि ऐसे शिष्य रहे जिन्होंने गुरुकुल और आश्रम की शिक्षा को आगे बढ़ाया और विश्व को अपना योगदान दिया।

ज्ञान परंपरा के स्रोत:

भारतीय संस्कृति में ज्ञान के कई स्रोत हैं। इन्हें परम्परागत रूप से वर्गीकृत किया गया है—

(क) श्रुति : श्रुति का अर्थ है "वही जो सुना गया।" इसमें वेद, उपनिषद् आदि आते हैं जो आत्मा, ब्रह्म, जीवन और मोक्ष जैसे विषयों को बताते हैं।

(ख) स्मृति : स्मृति ग्रंथ वेदों की व्याख्या और विस्तार हैं- रामायण, महाभारत, पुराण, धार्मिक साहित्य।

(ग) दार्शनिक ग्रंथ : न्याय, मीमांसा, सांख्य, युगीक, वेदांत जैसी परंपराएँ जीवन के गूढ़ तत्त्व और तर्क प्रदान करती हैं।

(घ) लोक परंपरा : लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, नीति शास्त्र - जनमानस की बुद्धि और अनुभव का संग्रह।

इन स्रोतों ने भारतीयों को ज्ञान, नैतिकता और व्यवहारिक जीवन का मार्ग दिखाया है।

ज्ञान, धर्म और व्यवहार का संबंध:

भारतीय संस्कृति में धर्म का अर्थ है 'धारण करना'— सत्य, करूणा, अहिंसा, न्याय, दया, त्याग आदि मूल्य। ज्ञान और धर्म को अलग नहीं माना जाता। ज्ञान का शुद्ध रूप तभी प्राप्त होता है जब वह धर्म के सिद्धान्तों से जुड़ा हो।

गीता में कहा गया है-
विद्या विनयेन शोभते अर्थात ज्ञान विनम्रता से शोभित होता है।
धार्मिक ग्रंथ सामाजिक और नैतिक शिक्षाओं से भरे हैं:
कर्म का महत्व
सत्य बोलने का आदर्श
मन, वाणी और कर्म की शुद्धि
अहिंसा, दान, समता की अवधारणा

भारतीय संस्कृति में ज्ञान केवल मनोगणित या दर्शन तक सीमित नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण कर्मयोग भी है।

ज्ञान परंपरा में तर्क और आलोचना:

भारतीय परंपरा में तर्क की मान्यता भी अत्यंत प्रबल थी। न सिर्फ ग्रंथों का अनुसरण बल्कि तर्क, प्रश्न और विमर्श को सत्कार दिया गया। न्याय और वैशेषिक, मीमांसा, चैत्य दर्शन आदि ने प्रश्न-विमर्श को शास्त्रीय आधार दिया।

बौद्ध और जैन परंपरा ने भी आत्मनिरीक्षण और तर्क को ज्ञान का आधार माना। ज्ञान का लक्ष्य केवल स्मरण नहीं, बल्कि अनुभव और सत्य की खोज थी।

आधुनिक युग में भारतीय ज्ञान की उपयोगिता:

आज वैश्विक स्तर पर योग, आयुर्वेद, ध्यान, वास्तुशास्त्र, भारतीय तर्कशास्त्र और नैतिक दर्शन का पुनः अध्ययन हो रहा है। ज्ञान परंपरा का आधुनिक जीवन में उपयोग:

तनाव प्रबंधन में योग और ध्यान
आयुर्वेदिक जीवनशैली
नेतृत्व और नैतिक प्रबंधन में भारतीय नीति सिद्धान्त
शिक्षा शैली में समग्र विकास मॉडल

भारतीय ज्ञान परंपरा बताते हैं कि ज्ञान केवल पुस्तकबद्ध नहीं होता; वह जीवन की समझ है।

निष्कर्ष:

भारतीय संस्कृति में ज्ञान परंपरा, केवल शैक्षणिक ज्ञान नहीं- जीवन, चरित्र, सामाजिक दायित्व, तर्क, धैर्य, दया, संयम, शक्ति और आत्मबोध का मार्ग है। यह परंपरा मानव जीवन को पवित्रता से जोड़ती है, मानसिक शांति देती है, और समय के साथ भी अपनी उपयोगिता खोती नहीं है।

भारतीय ज्ञान का लक्ष्य-स्व-प्रकाश, समाज की भलाइ और जीवन का संतुलन। इस परंपरा का अध्ययन आज न केवल भारत के लिए, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए आवश्यक है।

सहायक ग्रंथ :

भारतीय दर्शन ग्रंथ
भारतीय संस्कृति – डॉ. ममता प्रसाद
हिन्दी साहित्य का इतिहास -आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
संस्कृति के चार अध्याय -रामधारी सिंह दिनकर
स्वामी विवेकानंद- भारतीय संस्कृति के व्याख्यान
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन -भारतीय दर्शन: एक परिचय
हरिशंकर परसाई, पं. भीष्म साहनी - सांस्कृतिक लेख